ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 221-223
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

सूर्यबाला की कहानियों में स्त्री बोध

हरिश्चन्द्र अग्रहरि

अतिथि विद्वान (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, जैतवारा, सतना (म.प्र.), भारत

Received- 02.07.2020, Revised- 07.07.2020, Accepted - 13.07.2020 E-mail: dsaxena125@gmail.com

सारांश : *बीसवीं शताब्दी को 'महिला उत्थान का युग' माना गया है। इस युग में नारी मुक्ति की चर्चा जोरो पर है। पुरानी परम्पराओं, सड़ी–गली रूढ़ियों के संस्कार और कुप्रथाओं के सभी बन्धनों को तोड़कर आज नारी पुरूषों के समकक्ष है। आज नारी राजनीति, समाज, साहित्य, खेल आदि सभी क्षेत्रों में उच्च पदों की हकदार बनी हुई है। यही कारण है कि पुरूष प्रधान संस्कृति ने नारी की शक्ति तथा प्रतिभा का लोहा स्वीकार कर लिया है। आधुनिक नारी की मन:स्थिति, उलझन, पीड़ा, पति–पत्नी के सम्बन्ध, नौकरी पेशा नारी की व्यथा आदि विषयों को लेकर जिन महिला लेखिकाओं ने सशक्त सृजन किया है उनमें डॉ. सूर्यबाला श्रीवास्तव जी का नाम हिन्दी साहित्य जगत में विशेष उल्लेखनीय है।*

कुंजीभूत शब्द– महिला उत्थान, नारी मुक्ति , पुरानी परम्पराओं, कुप्रथाओं, सशक्त सृजन, नारी की शक्ति ।

साहित्य की कई विधाओं में उन्होंने साहित्य सृजन किया है। कहानी, उपन्यास, बाल साहित्य, हास्य व्यंग्य आदि विधाओं में से कहानी सूर्यबाला जी की प्रमुखतम विधा रही है। उनके साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी की समस्याओं का अंकन कर उसके पुरूषों के बराबर का स्थान देना रहा है। नारी के प्रति सूर्यबाला का दृष्टिकोण अत्यंत उदार है। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा नारी मन, उसके संघर्ष को चित्रित किया है। संवेदनशील साहित्यकार अपने परिवेश एवं परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता। साठोत्तरी महिला यथार्थवादी साहित्यकारों में सूर्यबाला जी की अपनी एक जमीन है। मन्नू भंडारी, ऊषा प्रियंवदा, मालती जोशी, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती आदि महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला एक ऐसी साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में अधिकतर नारी समस्याओं को ही चित्रित किया है। नारी का स्थान आज के समाज में कैसा है, उसकी यथार्थ स्थिति का अंकन उन्होंने अपने कहानी साहित्य में किया है।

वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। आपने नारी की वेदना को एक नारी की दृष्टि से देखने–परखने का प्रयास किया है। उससे यह प्रतीत होता है कि वे एक नारी होने के कारण सम्पूर्ण नारियों के प्रति उनके मन में पूरी निष्ठा है। नारी की प्रायः सभी छोटी–बड़ी समस्याओं को उन्होंने अपने कहानी साहित्य में चित्रित किया है। उनकी ये कहानियाँ घर की चारदीवारों तक सीमित नही हैं। उनकी साहित्य के प्रति एवं साहित्य में स्त्री के प्रति एक बड़ा दृष्टिकोण है।

इसी कारण सूर्यबाला जी ने पत्नी या माता को अपने साहित्यकार पर हावी नहीं होने दिया। अपने अनुभवों से ही साहित्य लेखन के लिए विषय चुने। अपने मन की अभिव्यक्ति के लिए सूर्यबाला जी ने कथा क्षेत्र ही चुना। वस्तुतः उन्हें मेरे संधिपत्र उपन्यास के द्वारा अधिक सफलता मिली फिर भी कहानी विधा की ओर उनका झुकाव स्वाभाविक है।

उनकी कहानियाँ नारी मन के प्रति करूणा और द्वंद्व से भरी हुई हैं। यही इनकी कहानियों की विशेषता भी है। 'सूर्यबाला जी की कहानियॉ वक्त की चिंतनधारा से कटी हुई नहीं है, वे सच्चाई से मुंह नही मोड़ती बल्कि उनका पूरी ताकत से सामना करती है।' वे हिन्दी की सुप्रसिद्ध महिला लेखिकाओं में सुधा अरोड़ा, मन्नू भण्डारी, मालती जोशी, राजी सेठ, ममता कालिया, उषा प्रियंवदा और सुभद्राकुमारी चौहान आदि से प्रभावित है। इसी तरह पुरूष रचनाकारों में वे प्रेमचंद, प्रसाद, टॉलस्टॉय, लुइसा, टामसहडी, शरदचन्द (बंगाली), फणीश्वरनाथ रेणु, पन्नालाल पटेल (गुजाराती), शिवाजी सावंत (मराठी) आदि साहित्यकारों को भी अपने लेखन का आदर्श मानती है।

सूर्यबाला ने अपनी लेखनी के माध्यम समकालीन कहानी साहित्य को सशक्त और समृद्ध बनाया है। उन्होंने अपनी कहानियों में महानगरीय जीवन, नौकरी पेशा नारी की समस्याएँ, पति–पत्नी के संबंध आदि को बड़े ही रोचक और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में नारी का संघर्ष अनोखा है। इनके नारी पात्र सूक्ष्म और समर्थ नारी की भूमिका को उजागर करते है। स्त्री अपने जीवन को जीने के लिए हर क्षण, हर पल समझौता करने के लिए बाध्य होती है। इन समझौतो में ही भावी पीढ़ी की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

भूमिका तैयार हो जाती है। 'इस स्थिति को सूर्यबाला जी ने बड़ी गहराई से उजागर करने का प्रयास किया है।' वे कहानी के प्रति सजग है। 'उनके कहानी संग्रहों में 'एक इंन्द्रधनुष जुबेदा के नाम', 'दिशाहीन मैं', 'थाली पर चाँद', 'मुंडेर पर', 'यामिनी कथा', 'गृहप्रवेश', 'सॉझावाती', 'कात्यायनी संवाद', 'इक्कीस कहानियाँ', 'पांच लम्बी कहानियाँ', 'मानुष गंध'।' उनके कहानी संग्रह की कहानियाँ अपने कहानी तत्वों के आधार पर पूरी तरह सफल है जिनका उद्देश्य आधुनिक युग की जटिलता और उनसे उभरे तथ्यों को आपने बखूबी ढंग से निर्वाह किया है। 'मेरा विद्रोह' कहानी में मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति का चित्रण वे बड़े ही सपाट ढंग से करती है। यहाँ पिता–पुत्र के बीच एक विद्रोह लेकिन बाद में गलतियों का पछतावा और बच्चों की मानसिकता में सुधार की भावना चित्रित है। इसी तरह 'कंगाल' कहानी में शिक्षित होकर भी नौकरी की समस्या और बेरोजगार युवक की मनोदशा का यथार्थ वर्णन है। 'अरे बिनौ.....तुमने कोई इम्तहान दिया था? ये देखो मार्क्सशीट आयी है। नम्बर तो बहुत अच्छे है.....इण्टरव्यू कब है, इसका?' कहो ना कहानी में लेखिका ने अकेलेपन की समस्या को उठाने का प्रयास किया है। यहाँ नायिका मीत अकेलेपन के कारण विवश है और वह इसी पीड़ा से व्याकुल भी है। लेकिन समझदार इतनी कि वह न तो परिवार से विद्रोह करती है और न ही आक्रोश। ये संदेश आज के समय के लिए लेखिका का लेखन साहित्य में बहुत बड़ा योगदान माना जा सकता हैं। सौगात कहानी में वर्तमान युग के मनुष्य के खोखलेपन को उजागर किया गया है। हमारा समाज वृद्ध व्यक्तियों की किस तरह उपेक्षा करता हैं ये इस कहानी का सार है। इसके बावजूद भी बृद्ध व्यक्ति परिवार को अनोखी सौगात देकर पाठकों को चकित करता है। गुप्तगू कहानी में आपसी रिश्तों के खालीपन को या खोखलेपन को दिखलाया गया है। आज का मनुष्य इतना स्वार्थी हो चला है कि वह किये गये उपकारों को तत्काल भूल जाता है। 'फिर भी, सोचो तो, के के तुम्हारे एक्सीडेंट के समय, मेरी बीमारी में, चुन्नू के एडमीशन के लिए....हमेशा ही.....कितना–कितना दौड़े थे। अब क्या सोचेंगे वह?....' सूर्यबाला की कहानी 'सुमिन्तरा की बेटियाँ' में एक नारी की वेदना को चित्रित किया है। जिसमें सुमिन्तरा के शोषण की कहानी हैं। 'विजेता' कहानी में भी सूर्यबाला ने एक ऐसे नौकर की ईमानदार मनोदशा का चित्रण किया है, वही पर शोषक सेठ की स्वार्थी भावना का जिक्र किया हैं, जो आज के परिवेश का जीवन्त चित्र है। इसमें ईमानदार नौकर अपनी मेहनत के पेसे सेठ के पास जोड़ने को रखता है लेकिन बापस करने के नाम पर सेठ उसे तरह–तरह के आश्वासन देकर खामोश किये रहता है। दिशाहीन कहानी में गांव के सीधे–साधे संस्कारी, आर्दशी युवक का चित्रण है। वह शिक्षा के लिए शहर में आता है। यहाँ की चमक–दमक उसे उस परिवेश से जुड़ने में बाधक लगता है। और अन्त में वह गांव का सीधा युवक दिशाहीन हो जाता हैं। 'मानुष गंध' कहानी में सूर्यबाला ने मेधावी डॉ. योग्यता और उपलब्धियों के मूल्यांकन का संदेश दिया है। 'शहर की सबसे दर्दनाक खबर' कहानी में साम्प्रदायिक विद्वेष की राजनीति के तंत्र को लेखिका ने उजागर किया है। जिसमें सीमेन्ट कांकरीट इमारतों में रहने वाले लोग भी कांकरीट बन चुके है। इसी तरह गृहप्रवेश कहानी में सूर्यबाला ने विघटन, आतंक एवं हताशा के बीच जी पाने की कोशिश का चित्रण हुआ है। 'थाली पर चाँद कहानी संग्रह में अधिकतम कहानियॉ पारिवारिक चित्रण को लेकर उपस्थित है। उसके साथ ही इसमें रेलवे के टी.सी. के द्वारा भोले–भोले दम्पत्ति को फंसाना, दफतरों में प्रमोशन का महत्व, बूढ़ों की उपेक्षा, चापलूसी करना, नारी का शोषण आदि विषयों पर भी कहानियॉ है।' खुशहाल कहानी का नायक वर्मा है। वर्मा एक कारखाने में वर्कर का काम करता है। उस कम्पनी का सुपरवाइजर वर्मा को बेबात से चॉटा मारता है, इसके कारण वर्मा को ऐसा लगता है कि यह खबर किसी भी तरह पत्नी और बच्चों तक नहीं पहुंचनी चाहिए, जिससे वह भयभीत होता है। पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से 'खुशहाल' कहानी की कथा आरम्भ से अन्त तक वर्मा वर्कर के चारों ओर घूमती है। वह एक गरीब वर्कर होने के कारण गाल पर सुपरवाइजर द्वारा चॉटा मारने के बाद भी विरोध नहीं करता। आखिरवी विदा सूर्यबाला जी की पारिवारिक कहानी है। कहानी के केन्द्र में विदेश में नौकरी करने वाला अपने माँ–बाप का इकलौता बेटा है। वह सात साल के बाद विदेश से वापस लौटा है। माँ अपने ढंग से बेटे को किसी बात की कमी न रहे इसलिए वह चिंतित रहती है। 'आजकल के बच्चों की तरह वह विदेश में नौकरी करता है। माँ–बाप के प्रति उसके मन में बिल्कुल आत्मीयता नहीं है।'

साठोत्तरी हिन्दी साहित्य के महिला कथाकारों में सूर्यबाला जी का अपना एक अलग महत्वपूर्ण स्थान है। चाहे शिक्षा के संदर्भ में हो, चाहे अध्यापक के रूप में हो इन सभी स्थानों से वह जुड़ी रही है। इसी कारण इन महानगरों में होने वाली विविध समस्याओं जैसे बेरोजगारी, अर्थाभाव, अवज्ञा, संस्कारहीनता, मनमानापन, दिशाहीनता, स्वार्थी रूप, शोषण, मकान समस्या आदि का चित्रण उन्होंने सहजता और सफलता के साथ किया है। सूर्यबाला जी की कहानियों में स्त्री केन्द्र में हैं। 'उनकी कहानियों में अकेलापन, संयुक्त

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

परिवार, पति–पत्नी संघर्ष, बूढ़ों की उपेक्षा, बेरोजगारी युवकों की मनोदशा, बालकों का मनोविज्ञान, भयग्रस्तता आदि विषयों को भी महत्व दिया है।'

सूर्यबाला की कहानियों को पढ़कर पाठक को उनके निजी व्यक्तित्व में दूसरों को मदद करने की प्रवृत्ति, हँसमुख व्यक्तित्व, भावुकता, संवेदनशीलता, ईमानदारी, मिलनसारिता, अति मितव्यय शीलता, परिश्रम आदि वे सारे गुण दिखाई देते है जिनका आधुनिक युग में और आगे भविष्य में लोगों को अपने रहन–सहन, जीवन शैली की परम आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी कहानी का समकालीन परिदृश्य, डॉ. अमिताभ वेदप्रकाश, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा 2005
2. हिन्दी कहानी का विकास, डॉ. देवेश ठाकुर, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1977
3. सूर्यबाला के कथा साहित्य में युग बोध, डॉ. बसंत कुमार माली, विकास प्रकाशन कानपुर, 2013
4. कंगाल (साझवाती), सूर्यबाला, किताबघर नई दिल्ली, 1995
5. थाली भर चांद, सूर्यबाला, ज्ञान गंगा प्रकाशन दिल्ली, 1988
6. नयी कहानी कथ्य, शिल्प और उपलब्धियाँ, डॉ. अनुपा कृष्णन जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2011

*****